RNI : UPHIN/2001/05232 ISSN : 0972-4737 SSP/LW/NP/61-2020-22
अगस्त, 2022/Aug., 2022 वर्ष–19 अंक–03 (225)/Year-19 Vol-03 (225) प्रकाशन तिथि 10 अगस्त, 2022 मूल्य 30/–

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

श्री शान्तिनाथ जिनालय : नित्तूर, तह.-गुब्बी, तुमकुर (कर्नाटक)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा प्रकाशन

झिरी जिला शिवपुरी की तीर्थंकर पद्मप्रभ की प्रतिमा

❒ नरेश कुमार पाठक

झिरी मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिला की पोहरी तहसील में शिवपुरी से २० किमी. दूरी पर है। झिरी के संबंध में कप्तान सी.ई. लुअर्ड ने गजेटियर रियासत ग्वालियर में लिखा है कि परगना सीपरी जिला नरवर अब के एक छोटा सा गांव सीपरी से १३ मील पश्चिम में २५°३४' उत्तरी और ७७°३२' पूरबी रेखाओं पर वाका है, लेकिन पहले यह मशहूर मुकाम था। इसके चारों तरफ पत्थर की शहर पनाह है, जिसमें तीन दरवाजे है यानी सीपरी नगरा और पौरी दरगजा यहां एक छोटा सा किला है और किले के अन्दर नरवर के कछवाहे राजा धीरज सिंह का बनवाया हुआ राजेश्वरी देवी का तख्त अब तक हिफाजत से रक्खा है और उसकी पूजा होती है। नरवर के कछवाहों के पास से जारों ठाकुरों के कब्जे में आ गया था और सन् १७९५ ईस्वी में महाराजा सिन्धिया को मिल गया था, इस गांव में ३० मंदिर एक मस्जिद एक ईदगाह सतियों के कई खम्बे और कई मकबरे हैं, सन् १८५७ ईस्वी के गदर में यह गांव पाडोन के राजा मानसिंह के कब्जे में आ गया था। जिसके पास वोह उस वक्त तक रहा जब तक कि महाराजा सिन्धिया की फौजों ने उसको निकाल बाहर न किया गांव के पूरब में किसी ठाकुर का बनवाया हुआ एक छोटा सा मंदिर है और वहां बैसाख सुदी चौदस का एक मेला लगता है। रक्वा मजरुआ २२६७ एकड़ है, काबिल अराअत २११७ एकड़ और मुमकिन जमीन ५१५ एकड़ है। सन् १९०१ ईस्वी में आबादी १७६७ थी यानी ९०४ मर्द ८६३ औरतें थी।

झिरी में श्री दिगम्बर जैन मंदिर है यहां से प्राप्त छठे तीर्थंकर पद्मप्रभ की प्रतिमा है, जो वर्तमान में शिवपुरी स्थित चन्द्रप्रभ जिनालय में पूजनीय है। इस प्रतिमा को डॉ. स्वीटी जैन ने छायाचित्र सहित प्रकाशित किया है, जिसके आधार पर उक्त प्रतिमा का विवरण इस प्रकार है-

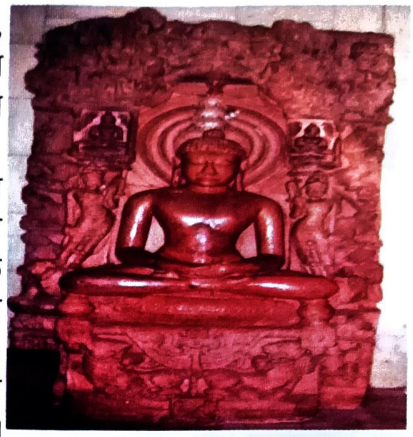

तीर्थंकर पद्मप्रभ पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। सिर के पीदे गोलाकार प्रभामण्डल सिर पर कुन्लित केश, लम्बे कर्णचाप, वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। वितान में त्रिछत्र दुन्दभिक वृक्ष मालाधारी विद्याधर अंकित है। सिर के दोनों पार्श्व में दोनों ओर पद्मासन में जिन प्रतिमा बैठी है। दोनों कुन्तलित केश लम्बे कर्णचाप एवं श्रीवत्स से अलंकृत है। तीर्थंकर दोनों पार्श्व में त्रिभंग मुद्रा में चावरधारी खड़े हैं, जिनके एक हाथ में चंवर दूसरा हाथ पैर की जंघा पर है। दोनों करण्ड मुकुट कुण्डल, हार, मेखला आदि आभूषण पहने हैं। पादपीठ पर तीर्थंकर पद्मप्रभ का ध्वज लांछन पद्म अंकित है। नीचे दोनों ओर सिंह उपासक का अंकन है। पादपीठ के पार्श्व में दायें बायें यक्ष-यक्षी कुसुम एवं अच्युता (या श्यामा या मानसी) अंकित है। पार्श्व अंकन में गज एवं सिंह व्याल बने हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। **(चित्र क्रमांक एक)**

-२४, रामानुजनगर, रामवाटिका के पीछे, गोविन्दपुरी के सामने, ग्वालियर (म.प्र.) मो. 08223915111

प्रागैतिहासिक साक्ष्य- नावागढ़ विरासत, ललितपुर (उ.प्र.)

पुरातन वृषभ रथ- अष्टधातु से निर्मित लघुकाल वृषभ रथ की सम्पूर्ण रचना मनोज्ञ एवं आकर्षक है। वृषभ, सारथी पहिए एवं शिखर के साथ सम्पूर्ण रथ भारतीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत का विशिष्ट शिल्प है।

जीवनोपयोगी उपकरण- नावागढ़ में खनन से प्राप्त धातु उपकरणों के साथ जीवनोपयोगी सामग्री यथा-लकड़ी की पोली, चौथिया पैला (अनाज मापक उपकरण) लकड़ी की परात, तौलने के बाँट, धातु की चुनौटी, घोड़ा, हिरण, वृषभ, पानदान, श्रृंगारदान, पिचकारी, दवात, कलश एवं कांसा, तांबा, पीतल के रसोई के बर्तन संगृहीत हैं।

कच्छप शिला- नावागढ़ से ३ किमी. दूर पश्चिम से फाईटोन शिलाओं के निकट जैन पहाड़ी पर २५ फीट लम्बी, १५ फीट ऊँची कच्छप शिला स्थित है। शिला के अधोतल में ब्र. जयकुमार 'निशांत' द्वारा अन्वेषित चितेरों की चंगेर'' के नाम से प्रसिद्ध शैलचित्रों की श्रृंखला प्राकृतिक रंगो से बनाई गयी थी, जो संरक्षण के अभाव एवं मौसम की प्रतिकूलता से क्षत-विक्षत हो चुकी है।

चंदेलकालीन बावड़ी- क्षेत्र के पूर्व में ५०० मीटर की दूरी पर १००० वर्ष प्राचीन ४० फीट चौड़ी एवं ३५ फीट गहरी, ईंट एवं पाषाण से निर्मित बावड़ी चंदेल शासक मदनवर्मन की धरोहर है, जो रख-रखाव के अभाव में नष्ट होने की कगार पर थी, जिसका जीर्णोद्धार नावागढ़ समिति के प्रयास से किया गया है।

इस बावड़ी में दोनों ओर से सीढ़ियाँ इस प्रकार निर्मित की गई हैं कि व्यक्ति पानी की सतह तक जाकर पानी ला सकता है।

संकलनकर्ता- पं. जयकुमार जैन 'निशांत'